डायाबिटीज़ इण्डिया द्वारा आयोजित ''डायाबिटीज़ फ्री इण्डिया–२०३० कैम्पेन'' में गुजरात के माननीय राज्यपाल श्री ओ०पी० कोहली जी का संबोधन। (०५ मई, 2017)

- डायाबिटीज़ इण्डिया द्वारा आयोजित ''डायाबिटीज़ फ्री इण्डिया–२०३० कैम्पेन'' को लेकर एक बहुत–ही महत्त्वपूर्ण विषय पर आज यह कार्यक्रम आयोजित किया गया है।
- श्रीमद्भगवतगीता में कहा गया है–''युक्ताहार विहारस्य''। इसका अर्थ है कि हमारा खान–पान और जीवनशैली उपयुक्त होनी चाहिये, जिससे हम रोगों से दूरी रख सकें। यह बात डायाबिटीज़ के सिलसिले में बहुत–ही महत्त्व की है, क्योंकि डायाबिटीज़ के कारणों में आहार–विहार की विषमता ही कारणभूत माना गया है। हमारी जीवनशैली यदि शारीरिक श्रम के अभाववाली है, हमारी भोजनशैली यदि रोगों को बढ़ावा देनेवाली है तथा हमारा कार्य करने का ढंग आलस से भरपूर है तो ऐसी स्थिति में डायाबिटीज़ का होना स्वभाविक ही है। इसी दृष्टि से श्रीमद्भगवतगीता में उपयुक्त आहार–विहार की सिफ़ारिश की गई है।
- इस प्रकार के कार्यक्रमों में डायाबिटीज़ से पीड़ित लोगों के बारे में जो आँकड़े पेश किए जाते हैं तथा विश्व के भिन्न–भिन्न देशों में डायाबिटीज़ग्रस्त लोगों की संख्या के बारे में बताया जाता है तब

बहुत ही डरावना चित्र सामने आता है। इतनी बड़ी संख्या में लोग डायाबिटीज़ से पीड़ित हैं, लेकिन इसके बारे में जानकारी बहुत कम है। जागरूकता का बड़ा अभाव है एवम् सामान्य आदमी को पता नहीं है कि डायाबिटीज़ किन कारणों से होता है और यदि डायाबिटीज़ हो गया तो क्या करना चाहिये, क्या उपाय करने चाहिये–इन सभी बातों की जानकारी उसके पास नहीं है। ऐसी स्थिति में सबसे बड़ा महत्त्व का काम यह है कि डायाबिटीज़ ही न हो, इसके लिए क्या करना चाहिये तथा किन बातों पर ध्यान रखना चाहिये, यह जानना जरूरी है। हमारे यहाँ स्कूलों में विभिन्न विषयों पर पाठ्यपुस्तकें हैं। क्या हमारी पाठ्यपुस्तक में डायाबिटीज़ के बारे में, उसे नियंत्रित करने के बारे में तथा उसके उपचार के बारे में कोई लेख हो सकता है ? मुझे लगता है कि हमारे शिक्षा विभाग को इस पर विचार करना चाहिये। यदि डायाबिटीज़ व्यापक बीमारी है तो इसके संदर्भ में जागरूकता बढ़ाने में हमारी पाठ्यपुस्तकों का योगदान हो सकता है।

- हमारे यहाँ मधुमेह की बहुत चर्चा हुई है तथा हमारी प्राचीन भारतीय चिकित्सा–पद्धति में भी मधुमेह के कारणों पर तथा इसके उपचार के बारे में काफी बातें की गई हैं। हमें इससे लाभ उठाना चाहिये। दूसरी तरफ, हम देखते हैं कि आजकल काफी मात्रा में योग

लोकप्रिय हुआ है तथा योग में लोगों की आस्था बढ़ी है। ऐसी स्थिति में हमें यह भी सोचना पड़ेगा कि क्या हमारी प्राचीन चिकित्सा–पद्धति तथा योग के जरिये हम डायाबिटीज़ को नियंत्रित कर सकते हैं। आधुनिक चिकित्सा–पद्धति तथा प्राचीन चिकित्सा–पद्धति दोनों का संगम होना आवश्यक है। ये काम आज के विशेषज्ञों का है, इस पर चिंतन होना चाहिये।

- मैं समझता हूँ कि हम लोग आज जिस दौर से गुज़र रहे हैं उस दौर में हम श्रीमद्भगवतगीता के उस श्लोक से बहुत दूर हटते जा रहे हैं। यदि डायाबिटीज़ इतना व्यापक रोग है तो उसके बारे में प्रारम्भिक जानकारी लोगों तक पहुँचनी चाहिये और ये कैसे पहुँचे तथा इसके लिए क्या करना चाहिये, इस पर भी चिंतन करना जरूरी है।

- इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात पूरी करता हूँ और आपके बीच से बिदा लेता हूँ।

धन्यवाद । जय हिन्द